

“में” और शख्सियत - ब.कु.प्रीति

वचनबद्धता के बगैर रिश्ते छिछले और खोखले होते हैं। ये सुविधा पर निर्भर होते हैं, और इसलिए थोड़े समय तक ही टिकते हैं। वचनबद्धता के बिना आज कोई स्थायी चीज़ नहीं रची जा सकती।

● तर्क करें पर तकरार न करें

तकरार और बहस से बचा जा सकता है, और थोड़ी सावधानी बरतकर इंसान मन की बहुत तकलीफों से बच सकता है। किसी बहस को जीतने का सबसे अच्छा तरीका है उसमें पड़ा ही न जाए। बहस एक ऐसी चीज़ है जिसे जीता नहीं जा सकता, क्योंकि अगर हम जीतते हैं तो भी हारेंगे और हारते हैं तो भी हारेंगे। अगर हम एक बहस में जीतते हैं मगर एक अच्छी नौकरी, ग्राहक, दोस्त, जीवनसाथी खो देते हैं, तो यह कैसी जीत है? बिलकुल खोखली। बहसबाज़ी झूठे अहंकार से पैदा होती है।

बहस करना हारी हुई लड़ाई को हारने के समान है। अगर कोई जीतता भी है तो उसे हारी हुई चीज़ से ज़्यादा कीमत चुकानी पड़ती है। जज़्बाती लड़ाइयाँ हमारे जीत जाने के बाद भी दिल में दर्द छोड़ जाती हैं।

बहस में दोनों व्यक्ति अपनी-अपनी बात मनवाने पर तुले होते हैं। बहसबाज़ी केवल अहंकार की ऐसी लड़ाई है, जिसमें एक-दूसरे पर चिल्लाने की होड़ सी लग जाती है। जो यह समझता है कि वह सब कुछ जानता है वह तो बेवकूफ है ही, लेकिन उससे बड़ा बेवकूफ वह है जो उससे बहस करता है।

क्या बहस से लाभ है?

हम जितनी बहस जीतते हैं, हमारे दोस्त उतने ही कम होते चले जाते हैं। सवाल यह है कि हम ठीक भी हों तो क्या बहस करना ज़रूरी है? जवाब साफ है, बिलकुल नहीं। क्या इस बात का यह मतलब हुआ कि हमें किसी की बात के विरोध में कोई मुद्दा उठाना ही नहीं चाहिए? ज़रूर उठाना चाहिए, लेकिन नरमी और समझदारी से, निष्पक्ष बात कहते हुए। अगर दूसरा व्यक्ति बहस कर रहा हो और हम उसे गलत साबित कर भी सकते हों, तब भी क्या यह उचित होगा? नहीं। एक बार अस्वीकार किए जाने के बावजूद क्या हम दोबारा अपना विचार प्रकट करेंगे? नहीं। क्यों? क्योंकि बहस उस तंग दिमाग से आ रही है जो क्या ठीक है के बजाए, कौन ठीक है साबित करने की कोशिश कर रहा है।

तर्क और बहस में अंतर क्या?

- बहस से आग निकलती है और तर्क से

रोशनी।

- बहस अहंकार और बंद दिमाग से उपजती है, जबकि तर्क खुले दिमाग से उपजता है।

- बहस में अज्ञानता की अदला-बदली होती है, जबकि तर्क में ज्ञान की।

- बहस में लोगों के मिज़ाज का पता चलता है, जबकि तर्क से उनकी समझदारी का।

- बहस में यह साबित करने की कोशिश की जाती है कि कौन सही है, जबकि तर्क में यह साबित किया जाता है कि क्या सही है।

मन में पहले से राय बनाए बैठे व्यक्ति के साथ बहस करना समझदारी नहीं है। ऐसा आदमी बंद दिमाग का होता है, इसलिए हम उसे तर्क से नहीं समझा सकते। एक छोटा दिमाग और बड़ा मुँह आम तौर पर बेबुनियाद बहस को जन्म देता है।

तर्क करने के लिए, बिना किसी रुकावट के दूसरे इंसान को भी अपने मन की बात कहने का अवसर दें। उसे मन का मैल निकालने दें। उसे हर कदम पर गलत साबित करने



की कोशिश न करें। उसे यह मौका कभी न दें कि वह हमको अपने स्तर तक गिरा दे। उसे इज़्जत दें, और तहजीब से पेश आएँ। इससे वह दुविधा में पड़ जाएगा। कारण चाहे कोई भी हो, स्थिति को संभालने का सही तरीका है कि:

1. धैर्य से सुनें
2. झगड़ा या जवाबी आक्रमण न करें - इससे दूसरा दुविधा में पड़ेगा क्योंकि उसे झगड़े की उम्मीद रहती है
3. माफी मांगे जाने की उम्मीद न करें
4. छोटी-छोटी बातों में राई का पहाड़ न बनाएं

तर्क करने का मतलब सिर्फ सही समय पर सही बात कहना ही नहीं है, बल्कि यह भी है कि जो नहीं कहना चाहिए उसे न कहिए। बच्चों को भी अपनी बात कहने की कला तो सिखाई जाए, लेकिन पलटकर जवाब देने की नहीं। बड़े होने के नाते हमें भी झगड़ालू बने बिना असहमति व्यक्त करने की कला सीखनी चाहिए।

बहस के दौरान एक व्यक्ति जैसा व्यवहार करता है उससे उसकी परवरिश का पता चलता है।

● पीठ पीछे बात न करें

याद रखें, जो लोग हमारे सामने दूसरों की बातें करते हैं, वे हमारी पीठ पीछे हमारे बारे में भी बात करते हैं।

गप्प हाँकने और झूठ बोलने के बीच करीबी रिश्ता है। एक गप्पी बातें सुनाता तो जल्दबाज़ी में है, मगर उन्हें मज़े ले-लेकर सुनाता है। वह अपने काम पर कभी ध्यान नहीं देता क्योंकि न तो उसके पास काम होता है और न ही दिमाग। गप्पी की दिलचस्पी काम की बातों से ज़्यादा उड़ती खबरों को सुनने में होती है। गप्प मारना एक ऐसी कला है, जिसमें कुछ खास कहा भी नहीं जाता और न ही कुछ अनकहा छूटता है।

किसी ने ठीक ही कहा है, “छोटे लोग दूसरों के बारे में बातें करते हैं, मध्यम स्तर के लोग चीज़ों के बारे में बात करते हैं, और महान लोग विचारों के बारे में बात करते हैं।” गप्प मारने से किसी के चरित्र की निंदा और बदनामी भी हो सकती है। गप्प सुनने वाले उतने ही दोषी हैं, जितने कि गप्प मारने वाले। गप्प हाँकने वाला प्रायः अपनी ही बातों के जाल में फँस जाता है। गप्पी इंसान का आदर नहीं करता। वह दिलों को तोड़ता है, ज़िंदगियों को तबाह करता है। वह धूर्त और दुर्भावनाओं से भरा होता है। वह असहाय और कमज़ोर इंसान को अपना शिकार बनाता है। गप्प की रोकथाम मुश्किल होती है, क्योंकि न तो उसकी कोई शकल होती है, न ही नाम। गप्प लोगों की प्रतिष्ठा को आँच पहुँचाती है, सरकारों का तख्ता पलट देती है, वैवाहिक जीवन में दरार डाल देती है, दिल को चोट पहुँचाती है और नींद उड़ा देती है। गप्प मारने से बचें। याद रखें, छोटे मुँह वाले बड़ी बात करते हैं।

● अपने वादे को वचनबद्धता में बदलें

वादा और वचनबद्धता में क्या अंतर है? वादा इरादे को ज़ाहिर करता है। वचनबद्धता का मतलब यह होता है कि वादा हर हाल में निभाया जाएगा चाहे कुछ भी हो। वचनबद्धता चरित्र की देन होती है, और विश्वास को बढ़ाती है। क्या हम कल्पना कर सकते हैं कि अगर लोग एक-दूसरे को दिए गए वचन को न निभाएं तो यह संसार कैसा होगा? वचनबद्धता के बगैर रिश्ते छिछले और खोखले होते हैं। ये सुविधा पर निर्भर होते हैं, और इसलिए थोड़े समय तक ही टिकते हैं। वचनबद्धता के बिना आज कोई स्थायी चीज़ नहीं रची जा सकती। बहुत से लोग वचनबद्धता को बंध जाना समझते हैं। वास्तव में यह सच नहीं है। वचनबद्धता हमारी आज्ञादी नहीं छीनती, वास्तव में यह हमको और आज्ञादी देती है, क्योंकि इससे हम सुरक्षित महसूस करते हैं। हमारी सबसे महत्वपूर्ण वचनबद्धता अपने मूल्यों के साथ होती है। इसलिए यह ज़रूरी है कि हमारे मूल्य अच्छे हों। मिसाल के तौर पर, अगर हम एक ऐसे नेता को समर्थन का वचन देते हैं जो बाद में चरस-गांजे का व्यापारी बन जाता है तो क्या हमें अपना वचन निभाना चाहिए? नहीं, बिलकुल नहीं। वचनबद्धता सुख और दुःख के रिश्तों की मज़बूती बनाए रखती है। यह इंसान की शख्सियत और रिश्तों से झलकती है। प्रभावी शख्सियत कैसे बनाए इसके बारे में हम आगे के अंकों में भी चर्चा करेंगे।



पुणे। पूर्व राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब.कु.सविता, माउण्ट आबू।



दिल्ली-जहांगीरपुरी। 'नारी सुरक्षा-हमारी सुरक्षा' अभियान के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में अपने उद्गार व्यक्त करते हुए रामकिशन वंशीवाल, पार्षद दि.न.नि.। साथ हैं ब.कु. मंजू, ब.कु. लाज व ब.कु. अल्पा।



चरोदा-रायपुर(छ.ग.)। महाशिवरात्रि के अवसर पर द्वादश ज्योतिर्लिंगम दर्शन का दीप प्रज्वलन द्वारा उद्घाटन करते हुए प्राचार्य मदन राजपूत, पार्षद ममता बहन, ब.कु. शिवानी, ब.कु. किरण तथा अन्य।



धमतरी-छ.ग.। 'नारी सुरक्षा-हमारी सुरक्षा' कार्यक्रम के अंतर्गत अपने विचार व्यक्त करते हुए ब.कु. मनोरमा, इलाहाबाद। साथ हैं ब.कु. आशा, भिलाई, अनिमा कुजुर, डिस्ट्रीक्ट कमान्डेंट, धमतरी तथा ब.कु. सरिता।



कुल्लु-हि.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम के अंतर्गत विद्याधर भाई, ब.कु. किरण, एच.ए.एस. शरण ठाकुर, हिमाचल के पूर्व महिला आयोग की अध्यक्ष अंबिका सूद, ब.कु. कृष्णा, पुलिस अधिकारी सरस्वती बहन तथा अन्य।



वारंगल-काजीपेट(आंध्र प्रदेश)। बी.एस.सी. नर्सिंग कॉन्वोकेशन सेरेमनी के दौरान बिशप बाला को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब.कु.श्री देवी।